ARYAVART SHODH VIKASH PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 197-198
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-8, No.-II, Issues-IX YEAR- Dec-2017

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी और उनका बहुआयामी रचना संसार

डॉ0 सन्तोष कुमार सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर–हिन्दी विभाग, श्री सुदृष्टि बाबा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सुदिष्टपुरी, रानीगंज, बलिया (उ0प्र0) भारत

हिन्दी साहित्य के अनन्य साधक व बहुमुखी प्रतिभा के धनी पण्डित चंद्रधर शर्मा गुलेरी का जन्म सन् 1883 ई0 में हुआ था। मूलतः हिमांचल प्रदेश के गुलेर नामक गाँव के निवासी उनके पिता पण्डित शिवराम शास्त्री राजसम्मान पाकर जयपुर , राजस्थान में बस गए थे। शास्त्री जी की तीसरी पत्नी लक्ष्मीदेवी ने चन्द्रधर को जन्म दिया। घर में इस बालक को संस्कृत भाषा, वेद, पुराण आदि के अध्ययन, पूजा–पाठ, संध्या–वंदन तथा धार्मिक कर्मकाण्ड का वातावरण मिला और मेधावी चन्द्रधर ने इन सभी संस्कारों और विद्याओं को आत्मसात् किया। जब गुलेरी जी मात्र दस वर्ष के ही थे, तब उन्होंने एक बार संस्कृत में व्याख्यान देकर भारत धर्म महामंडल के विद्वानों को आश्चर्यचकित कर दिया था। वे मात्र पाँच वर्ष की अवस्था में अंग्रेजी का टेलीग्राम अच्छी तरह पढ़ लेते थे। चन्द्रधर ने सभी परीक्षाएँ प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कीं। सन् 1904 ई. में गुलेरी जी मेयो कॉलेज, अजमेर में अध्यापक के रूप में कार्य करने लगे।

अध्यापक के रूप में उनका बड़ा मान–सम्मान था। अपने शिष्यों में चन्द्रधर लोकप्रिय तो थे ही, इसके साथ अनुशासन और नियमों का भी वे सख्ती से अनुपालन करते थे। उनकी असाधारण योग्यता से प्रभावित होकर पण्डित मदनमोहन मालवीय ने उन्हें बनारस बुला भेजा और हिन्दू विश्वविद्यालय में प्रोफेसर का पद दिया। आगे चलकर उन्होंने अंग्रेजी शिक्षा भी प्राप्त की। कलकत्ता विश्वविद्यालय से एफ.ए. और प्रयाग विश्वविद्यालय से बी.ए., प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करने के बाद चाहते हुए भी वे आगे का औपचारिक अध्ययन, विषम परिस्थितिवश जारी न रख पाए, यद्यपि उनके स्वाध्याय और लेखन का क्रम अबाध गति से चलता रहा। बीस वर्ष की उम्र के पहले ही उन्हें जयपुर की वेधशाला के जीर्णोद्धार तथा उससे सम्बन्धित शोधकार्य के लिए गठित कार्यकारी मण्डल में शामिल कर लिया गया था और कैप्टन गैरेट के साथ मिलकर उन्होंने ''द जयपुर ऑब्जरवेटरी एण्ड इट्स बिल्डर्स'' शीर्षक अँग्रेजी ग्रन्थ की रचना की। अपने अध्ययन काल में ही उन्होंने सन् 1900 में जयपुर में 'नागरी मंच' की स्थापना में योग दिया और सन् 1902 से मासिक पत्र 'समालोचक' के सम्पादन का भार भी सँभाला। कुछ वर्ष काशी की 'नागरी प्रचारिणी सभा' के सम्पादक मंडल में भी उन्हें सम्मिलित किया गया। उन्होंने देवी प्रसाद ऐतिहासिक पुस्तकमाला, सूर्य कुमारी पुस्तकमाला और नागरी प्रचारिणी पुस्तकमाला का सम्पादन किया और नागरी प्रचारिणी सभा के सभापति भी रहे। जयपुर के राजपण्डित कुल में जन्म लेने वाले गुलेरी जी का अनेक राजवंशों से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा। वे पहले खेतड़ी नरेश जयसिंह के और फिर जयपुर राज्य के सामन्त–पुत्रों के अजमेर के मेयो कॉलेज में अध्ययन के दौरान, उनके अभिभावक रहे। सन् 1916 में उन्होंने मेयो कॉलेज में ही संस्कृत विभाग के अध्यक्ष का पद सँभाला। सन् 1920 में पं. मदन मोहन मालवीय के आग्रह के कारण उन्होंने बनारस आकर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्राच्यविद्या विभाग के प्राचार्य और फिर सन् 1922 में प्राचीन इतिहास और धर्म से सम्बद्ध मनीन्द्र चन्द्र नन्दी पीठ के प्रोफेसर पद का कार्यभार भी ग्रहण किया। इस बीच परिवार में अनेक दुःखद घटनाओं के आघात भी उन्हें झेलने पड़े। सन् 1922 में बारह सितम्बर को पीलिया के बाद तेज बुखार के फलस्वरूप मात्र उन्तालीस वर्ष की आयु में उनका देहावसान हो गया।

इस अल्प आयु में ही गुलेरी जी ने अपने विशद स्वाध्याय के बल पर हिन्दी और अंग्रेजी के अतिरिक्त संस्कृत, प्राकृत, बांग्ला, मराठी आदि का ही नहीं , बल्कि जर्मन तथा फ्रेंच भाषाओं का ज्ञान भी प्राप्त किया था। उनकी रुचि का क्षेत्र भी बहुत विस्तृत था , जो धर्म, ज्योतिष, इतिहास, पुरातत्त्व, दर्शन, भाषा विज्ञान, शिक्षाशास्त्र और साहित्य से लेकर संगीत, चित्रकला, लोककला, विज्ञान और राजनीति तथा समसामयिक सामाजिक स्थिति व रीति–नीति तक फैला हुआ था। उनकी अभिरुचि और सोच को गढ़ने में स्पष्ट ही इस विस्तृत पृष्ठभूमि का स्पष्ट प्रभाव था और इसका परिचय उनके लेखन की विषयवस्तु व उनके दृष्टिकोण में बराबर मिलता रहा है। पं. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी के साथ एक बहुत बड़ी विडम्बना यह है कि, उनके अध्ययन, ज्ञान और रुचि का क्षेत्र यद्यपि अत्यंत विस्तृत था और उनकी प्रतिभा का प्रसार भी अनेक कृतिरूपों और विधाओं में हुआ था, किन्तु सामान्य हिन्दी पाठक ही नहीं, विद्वानों का एक बड़ा वर्ग भी उन्हें उनकी प्रसिद्ध कहानी 'उसने कहा था' के रचनाकार के रूप में ही पहचानता है। इस कहानी की अप्रतिम लोकप्रियता ने उनके शेष वैविध्य भरे सशक्त कृति संसार को मानो उपेक्षित कर दिया है। उनके प्रबल प्रशंसक और प्रखर आलोचक भी प्रायः इसी कहानी को लेकर विमर्श करते रहे हैं।

अनुरूपी लेखक

गुलेरी जी की ' उसने कहा था 'कहानी सन् 1915 में 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। यह कहानी पाठकों व आलोचकों द्वारा मुक्त कंठ से सराही गई और कलात्मकता की दृष्टि से भी इसे हिन्दी की अद्वितीय कहानी माना गया। उन्हीं दिनों कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद की कहानियाँ भी प्रकाशित होने लगी थीं। उनकी पहली हिन्दी कहानी 'पंच परमेश्वर' 'सरस्वती' पत्रिका में सन् 1916 में प्रकाशित हुई । हिन्दी कहानी साहित्य के विकास के इस क्रम में 'सरस्वती' पत्रिका द्वारा ' पंडित चंद्रधर शर्मा गुलेरी', 'इंदु' पत्रिका द्वारा 'बाबू जयशंकर प्रसाद' एवं 'मन्नन द्विवेदी' द्वारा 'सप्त सरोज' की भूमिका में 'प्रेमचंद' का अभ्युदय हुआ। खड़ी बोली हिंदी के कहानी साहित्य की शिल्प विधि एवं उसका समूचा विकास इन्हीं कथाकारों के व्यक्तित्व से प्रतिष्ठित हो सका। यह हिंदी कहानी का सौभाग्य ही माना जाएगा कि , जिन साहित्य मनीषियों द्वारा इसका आविर्भाव हुआ था, उन्हीं की सतत साहित्य साधना से इसका विकास भी हुआ। कहना न होगा कि गुलेरी, प्रसाद और प्रेमचंद के व्यक्तित्व से पृथक–पृथक कहानी संस्थानों का जन्म हुआ। परिणाम स्वरूप अनेक अमूल्य कथा कृतियाँ सामने आयीं। कहानी कला और उसके शिल्प विकास के क्रम में प्रसाद और प्रेमचंद से पहले गुलेरी जी का स्थान निश्चय ही महत्वपूर्ण है। गुलेरी जी हिंदी कहानी कला के विकास के प्रस्तुतकर्ता कथाकार हैं। प्रभाव, प्रेरणा और साहित्यिक उद्वेलन की दृष्टि से उनका एकांत स्वतंत्र स्थान है। अतः ऐतिहासिक दृष्टि से गुलेरी जी की कहानियों का पृथक रूप से अध्ययन, अनुशीलन एवं विवेचन–विश्लेषण अपना अलग मूल्य रखता है। मात्र तीन कहानियाँ ('उसने कहा था', 'बुद्धू का काँटा' और 'सुखमय जीवन') लिखकर, हिन्दी कथा साहित्य को नई दिशा और नए आयाम देने वाले प्रख्यात् कथाकार चंद्रधर शर्मा गुलेरी की कहानी 'उसने कहा था' आज भी शिल्प, संवेदना और विषय वस्तु की दृष्टि से उतनी ही चर्चित, प्रासंगिक एवं प्रेरणास्पद है, जितनी अपने आरम्भिक दिनों में थी। लोक जीवन में यह कहानी इस तरह रच–बस गई है कि, इसे लोक कथा के रूप में सुनाया जाने लगा है। किसी कथाकार के कथा कौशल के उत्कर्ष का इससे बड़ा प्रमाण और क्या हो सकता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने गुलेरी जी की कहानी 'उसने कहा था' पर रीझकर कर लिखा था कि "श्री चंद्रधर शर्मा गुलेरी की अद्वितीय कहानी 'उसने कहा था' में पक्के यथार्थवाद के बीच सुरुचि की चरम मर्यादा के भीतर भावुकता का चरम उत्कर्ष अत्यंत निपुणता के साथ संपुटित है। घटना इसकी ऐसी है, जैसी बराबर हुआ करती है, पर उसमें प्रेम का एक स्वर्गीय स्वरूप झाँक रहा है। केवल झाँक रहा है, निर्लज्जता के साथ पुकार या कराह नहीं रहा है। कहानी भर में कहीं प्रेमी की प्रगल्भता, निर्लज्जता और वेदना की वीभत्स विवृत्ति नहीं हुई है। सुरुचि के सुकुमार से सुकुमार स्वरूप पर कहीं आघात नहीं पहुँचता। इसकी घटनाएँ ही बोल रही हैं। पात्रों को बोलने की अपेक्षा नहीं।"

शुक्ल जी की यह टिप्पणी एक प्रकार से आधुनिक कहानी की परिभाषा है। यह ध्यातव्य है कि प्राचीन साहित्य, संस्कृति, हिन्दी भाषा, समकालीन समाज और राजनीति आदि विषयों से जुड़ी गुलेरी जी की विद्वता का उल्लेख यदा–कदा होता रहता है, पर 'कछुआ धरम' और 'मारेसि मोहि कुठाउँ' जैसे एक दो निबन्धों और 'पुरानी हिन्दी' जैसी लेखमाला की चर्चा को छोड़कर उनकी विद्वत्ता की बानगी सामान्य पाठक तक शायद ही पहुँची हो। व्यापक हिन्दी समाज उनकी प्रकाण्ड विद्वत्ता और सर्जनात्मक प्रतिभा से लगभग अपरिचित है।

गुलेरी जी का सरोकार अपने समय के केवल भाषा और साहित्य आंदोलनों से ही नहीं बल्कि युगीन जीवन के हर पक्ष से था। किसी भी प्रसंग में जो स्थिति उनके मानस को आकर्षित या उत्तेजित करती थी, उस पर टिप्पणी किए बिना वे नहीं रह पाते थे। ये टिप्पणियाँ उनकी प्रतिबद्धताओं, उनकी कुशाग्रता और दृष्टिकोण के खुलेपन की गवाही देती हैं। अनेक प्रसंगों में गुलेरी जी अपने समय से इतना आगे थे कि, उनकी वैचारिक स्थापनाएँ आज भी हमें अपने चारो ओर देखने और सोचने को विवश करती हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. चंद्रधर शर्मा गुलेरी विशेषांक, भारत दर्शन, जुलाई–अगस्त 2014
2. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचंद्र शुक्ल
4. सृजन संकल्प, अप्रैल–जून – 2022

*****